संस्कृत प्रचार पुस्तकमाला सं० ४९

बाल-कवितावलिः

(हँसते-खेलते संस्कृत)

(बाल-शिक्षणोपयोगी सरल-सरस हिन्दी-संस्कृत-मिश्रित कवितायें)

प्रथम-भागः

रचयिता—

श्री वासुदेव द्विवेदी वेदशास्त्री साहित्याचार्य

(सम्पादक—संस्कृत प्रचार पुस्तकमाला)

सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय

वाराणसी

बाल-कवितावलिः

(हँसते-खेलते संस्कृत)

प्रथम भाग

रचयिता—

श्री वासुदेव द्विवेदी वेदशास्त्री साहित्याचार्य

(सम्पादक—संस्कृत प्रचार पुस्तकमाला)

सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय

वा रा ण सी ।

प्रकाशक—
सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय
वाराणसी।

❁

प्रथम आवृत्ति एक हजार
मूल्य—तीस पैसे

❁

मुद्रक—
बैजनाथ प्रसाद
कल्पना प्रेस
रामकटोरा रोड, वाराणसी।

आवश्यक निवेदन

प्रस्तुत पुस्तक "हँसते-खेलते संस्कृत पुस्तक माला" के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही है जो अपने ढंग की बिलकुल नवीन और निराली पहली रचना है। इसमें इसके नामानुरूप ही बालकों को बिना परिश्रम के, मनोरञ्जन के साथ, हँसते-खेलते संस्कृत सिखाने की दृष्टि से ऐसी कवितायें तथा तुकबन्दियाँ प्रकाशित की गई है जिनमें पहले संस्कृत के वाक्य हैं और फिर उनका हिन्दी-अनुवाद है और दोनों को मिलाकर बाँचने से एक छन्द बन जाता है। इस प्रकार यह पुस्तक जहाँ हिन्दी से संस्कृत और संस्कृत से हिन्दी अनुवाद सीखने-सिखाने में सहायक है वहीं कविता पढ़ने का भी आनन्द देती है। इन कविताओं की एक विशेषता यह भी है कि यदि इनमें से केवल संस्कृत पदों को अलग करके पढ़ा जाय तो वह संस्कृत कविता हो जाती है, यदि हिन्दी पदों को अलग करके पढ़ा जाय तो हिन्दी कविता हो जाती है और यदि मिलाकर पढ़ा जाय तो मिश्रित कविता हो जाती है। इस प्रकार इस पुस्तक से संस्कृत, हिन्दी और मिश्रित कविताओं के पढ़ने का एक साथ आनन्द प्राप्त हो सकता है और बालकों में अनायास ही इस पुस्तक के माध्यम से संस्कृत पढ़ने की अभिरुचि उत्पन्न की जा सकती है।

आशा है, इन सभी बातों पर ध्यान देते हुए समस्त अभि-भावक, अध्यापकगण तथा संस्कृत-प्रचार के इच्छुक जन अपने बाल-बच्चों तथा विद्यार्थियों के लिये इस पुस्तक का अध्ययन अनिवार्य करेंगे और इस प्रकार संस्कृत प्रचार में सहायता देकर हमें अनुगृहीत करेंगे।

१ जनवरी १९६६ ई०
वाराणसी।

विनीत—
रचयिता

बाल-कवितावलि:

प्रार्थना

हे दयानिधे ! हे दयाधाम !
हे दयानिधे ! हे दयाधाम !

वीरा भवेम हम वीर बनें
धीरा भवेम हम धीर बनें
शिष्टा भवेम हम शिष्ट बनें
सभ्या भवेम हम सभ्य बनें।

सततं पठेम हम सदा पढ़ें
सततं लिखेम हम सदा लिखें
सत्यं वदेम हम सत्य कहें
सुखिनो वसेम हम सुखी रहें।

तुभ्यं नमोऽस्तु तुमको प्रणाम
हे दयानिधे हे दयाधाम !

टप टप, गप गप

निपतति जम्बूः टप टप
गिरती जामुन टप टप।
बालः खादति गप गप
लड़का खाता गप गप।
\+ + +
वायुः प्रवहति हर हर
हवा बह रही हर हर
पत्रं निपतति खर खर
पत्ता गिरता खर ख़र।
\+ + +
विहगो ब्रूते चुन चुन
चिड़िया बोले चुन चुन
भ्रमरो गुञ्जति गुन गुन
भँवरा गूँजे गुन गुन।
\+ + +
गन्त्री गच्छति धक् धक्
गाड़ी जाती धक् धक्
बालः पश्यति टक् टक्
लड़का देखे टक् टक्।
\+ + +

खेलकूद

एकः धावति धम् धम् धम् धम्
एक दौड़ता धम् धम् धम् धम्
एकः नृत्यति छम् छम् छम् छम्
एक नाचता छम् छम् छम् छम्
एकः ब्रूते बम् बम् बम् बम्
एक बोलता बम् बम् बम् बम् ।

\+ \+ \+

कश्चित् जल्पति बड़ बड़ बड़ बड़
कोई बकता बड़ बड़ बड़ बड़
कश्चित् निपतति धड़ धड़ धड़ धड़
कोई गिरता धड़ धड़ धड़ धड़
कश्चित् कुरुते हड़ बड़ हड़ बड़
कोई करता हड़ बड़ हड़ बड़ ।

वर्तमानकाल के वाक्य

शिशुः स्वपिति बच्चा है सोता
कृषकः वपति कृषक है बोता

अजा चरति बकरी है चरती
में में कुरुते में में करती।

सर्पः दशति साँप डँसता है
मशकः दशति मशक डँसता है
वायुः चलति हवा चलती है
वायुः वहति हवा बहती है।

जलं वहति पानी बहता है
कुम्भः स्रवति घड़ा चूता है
अग्निः ज्वलति आग जलती है
दालिः गलति दाल गलती है।

रामः पठति राम पढ़ता है
श्यामः लिखति श्याम लिखता है
शुकः पठति सुग्गा पढ़ता है
शिशुः रटति बच्चा रटता है।

\+ + +

गीता गायति गीता गाती
कमला खादति कमला खाती
विमला रोदिति विमला रोती
सुषमा शेते सुषमा सोती।

शीला खेलति शीला खेल रही है
लीला धावति लीला दौड़ रही है
मित्रा पश्यति मित्रा देख रही है
कृष्णा पृच्छति कृष्णा पूछ रही है ।

\+ \+ \+

बालकाः खेलन्ति लड़के खेलते हैं
बालका धावन्ति लड़के दौड़ते हैं
बालकाः पृच्छन्ति लड़के पूछते हैं
बालकाः क्रीडन्ति लड़के खेलते हैं ।

घोटका धावन्ति घोड़े दौड़ते हैं
कुक्कुरा बुक्कन्ति कुत्ते भूँकते हैं
कोकिलाः कूजन्ति कोयल कूजते हैं
षट्पदा गुञ्जन्ति भौरें गूजते हैं ।

नर्तका नृत्यन्ति नर्तक नाचते हैं
गायका गायन्ति गायक गारहे हैं
दर्शकाः पश्यन्ति दर्शक देखते हैं
यात्रिणः गच्छन्ति यात्री जारहे हैं ।

वारिदा गर्जन्ति बादल गरजते हैं
बारिदा वर्षन्ति बादल बरसते हैं
बिन्दवः निपतन्ति बूँदे गिर रही हैं
आपगाः प्रवहन्ति नदियाँ बह रही हैं ।

दिनचर्या

वयं बालकाः सदा पठामः
हम बालक हर दम पढ़ते हैं
वयं बालकाः सदा लिखामः
हम बालक हर दम लिखते हैं
वयं बालकाः सदा चलामः
हम बालक हर दम चलते हैं
वयं बालकाः सदा मिलामः
हम बालक हर दम मिलते हैं।

\+ + +

वयं प्रभाते उत्तिष्ठामः
हम सब प्रातः उठ जाते हैं
ततो नित्यकर्तव्यं कुर्मः
तब हम नित्य-क्रिया करते हैं
ततो वयं पठितुं गच्छामः
तब हम सब पढ़ने जाते हैं
सायं पुनः समागच्छामः
पुनः सामको आ जाते हैं।

\+ + +

भुक्त्वा पीत्वा मन्दं मन्दं
खाकर पीकर धीरे धीरे
पठितुं वयं व्रजामः
पढ़ने हम जाते हैं
तत्र पठित्वा पाठं सायं
वहाँ पाठ पढ़कर सँझा को
गेहम् आगच्छामः
घर पर आ जाते हैं।

घटी (घड़ी)

घटी मदीया ब्रूते टन टन
घड़ी हमारी बोले टन टन।
चलति तदीया सूची दन दन
चलती उसकी सूई दन दन।
नहि कदापि अवकाशं लभते
नहीं कभी भी छुट्टी पाती।
सदा जागृता सेवां कुरुते
सदा सज़ग हो सेवा करती।

अभिलाषा

वीर-बालका वयम्
वीर बाल हम सभी

वीर-बालका वयम्
वीर बाल हम सभी

सागरं समुत्तरेम सागर को पार करें
गगनतले उत्पतेम आसमान में उड़ें।

भूतले जमीन पर
पर्वते पहाड़ पर
उत्सवे उमंग में
संग्रामे जंग में

सर्वतो वयं जयेम सब जगह विजय करें।
निर्भयाः सदा भवेम सर्वदा निडर रहें।

नो कदापि वित्रसेम
त्रस्त हों नहीं कभी।

वीर - बालका वयम्
वीर बाल हम सभी।

पाठशाला जाने की तैयारी

एहि वयस्य ! चलामः पठितुम्
आओ मित्र चलें पढ़ने हम ।
नैव शोभनं भवने स्थातुम्
नहीं ठीक है घर पर रहना ।

पश्य घण्टिका ब्रूते टन टन
देखो, घण्टी बजती टन टन ।
उचितं नैव विलम्बं कर्तुम्
उचित नहीं है देरी करना ।

मम मनः (मेरा मन)

सुखं मनो मे लभते
मेरा मन सुख पाता ।

विकसित-कुसुमम् खिले सुमन को
नीलं गगनम् नील गगन को
निर्मल - चित्तम् निर्मल मन को
नवं यौवनम् नव यौवन को
श्याम - नीरदं काले घन को

रम्यं वदनं   रम्य वदन को
सुन्दर - देहं   सुन्दर तन को
दृष्ट्वा दृष्ट्वा   देख देख कर
मनो मदीयं हृष्यति
मेरा मन हरषाता ।

+ + +

मनो मदीयं कुप्यति
मेरा मन झुँझलाता ।

पलितं केशम्   पके बाल को
शुष्क-कपोलं   धसे गाल को
अवनत-भालं   नीच भाल को
मूकं बालं   मूक बाल को
जलमय - सूपं   केवल पानी भरी दाल को
मन्दं गमनं   मन्द चाल को
शून्यं भवनं   शून्य हाल को
दृष्ट्वा दृष्ट्वा   देख देख कर
मनो मदीयं दुःख्यति
मेरा मन दुख पाता
मनो मदीयं कुप्यति
मेरा मन झुँझलाता ।

विडालः (बिलार)

अयं विडालः	यह विलार
मूषक - वैरी	चूहों का दुश्मन
मन्दं गच्छति	धीरे चलता
मौनं तिष्ठति	चुपके रहता
मध्ये मध्ये	बीच बीच में
नयने मीलति	आँख मूँदता
किन्तु मूषकम्	पर चूहा को
दृष्ट्वा धावति	देख दौड़ता
धृत्वाऽऽक्रामति	पकड़ दबाता
मुखे गृहीत्वा	मुंह में लेकर
निभृते गच्छति	शून्य जगह में जाता
मुदितः खादति	खुश हो खाता ।

गोचारकाः (चरवाहे)

प्रत्यूषे आवासात्	खूब सबेरे घर से
भुक्त्वा पीत्वा	खाकर पीकर
मिलिताः सव	सब मिल जुलकर
लघवो लघवः	छोटे छोटे

तथा युवानः	और सयाने
गोपा बालाः	ग्वाल बाल सब
चारयन्ति गाः	गाय चराते ।

+ + +

हस्ते लकुटी	कर में लाठी
स्कन्धे एकं वस्त्रम्	एक वस्त्र कन्धे पर
किञ्चित् सक्तुम्	थोड़ा सत्तू
अल्पं गुडं गृहीत्वा	थोड़ा सा गुड़ लेकर
जातु भ्रमन्तः	कभी घूमते
जातु शयानाः	कभी लेटते
जलं पिबन्तः	पानी पीते
संगीतं गायन्तः	गाने गाते
चारयन्ति गाः	गाय चराते ।

+ + +

यदा धेनवः	जब सब गायें
क्षेत्रे क्षेत्रे गत्वा	खेत खेत में जाकर
हरितं शस्यं	हरे फसल को
चरितुं लग्ना	चरने लगतीं
नो मन्यन्ते	नहीं मानतीं
तदा चारकाः	तब चरवाहे
दण्डं धृत्वा	डंडा लेकर

त्वरितं गत्वा	झट पट जाकर
हत्वा हत्वा	मार मार कर
गालिं दत्वा	गाली देकर
निवर्तयन्ते धेनूः	गायों को लौटाते
चारयन्ति गाः	गाय चराते ।

चुन्नू मुन्नू

एतौ बालौ	ये दो लड़के
चुन्नू मुन्नू	चुन्नू मुन्नू
सदा खेलतः	सदा खेलते
इतो धावतः	इधर दौड़ते
ततो धावतः	उधर दौड़ते
वारं वारं पततः	बार बार गिर जाते
यदपि लभेते	जो कुछ पाते
सर्वं वदने क्षिपतः	सब कुछ मुंह में रखते
सर्पं सर्पं चलतः	सरक सरक कर चलते
सततं हसतः	हरदम हँसते ।
किन्तु बुभुक्षा यदा बाधते	किन्तु भूख जब लगती
तारं रुदतः	खूब जोर से रोते
मातुः सविधे व्रजतः	माँ के पास पहुँचते

सम्यग् दुग्धं पीत्वा   खूब दूध पी
मुदितौ भवतः   खुश हो जाते
पुनः खेलितुं लगतः   पुनः खेलने लगते
सर्वं मुदितं कुरुतः   सबको खुश कर देते ।

मूषिका (चूहिया)

आगता आगता   आ गई आ गई
मूषिका आगता   चूहिया आ गई ।
जागृता सन्ततं   हर समय जागती
वासरो वा निशा   रात हो या दिवस
धावमाना इतः   इस तरफ दौड़ती
धावमाना ततः   उस तरफ दौड़ती
शङ्किता सर्वदा   चौंकती हर घड़ी
पादयोरुत्थिता   पैर पर हो खड़ी
ईक्षमाणाऽभितः   सब तरफ झाँकती
आददाना कणम्   एक दाना लिये
उच्छलन्ती मुहुः   कूदती फाँदती
क्वापि लीना पुनः   फिर कहीं छिप गई
विद्रुता वा क्वचित्   या कहीं भग गई
निद्रिता वा क्वचित्   या कहीं सो गई ।

सदाचार-शिक्षा

नित्यं प्रातः जागृहि — रोज सबेरे जागो
हस्त-मुखं प्रक्षालय — हाथ और मुँह धोओ
शान्तचेतसा उपविश — शान्तचित्त हो बैठो
पठितं पाठं चिन्तय — पढ़े पाठ को सोचो ।

❀ ❀ ❀

स्नानं कुरु ध्यानं कुरु
स्नान करो ध्यान करो
मधुरं जलपानं कुरु
मीठा जलपान करो
पठने अवधानं कुरु
पढ़ने में ध्यान धरो
देशभक्ति - गानं कुरु
देशं भक्ति गान करो ।

❀ ❀ ❀

हीन - जने मानं कुरु
हीनों का मान करो
दीन - जने दानं कुरु
दीनों को दान करो

जन - जन - सम्मानं कुरु
सब का सम्मान करो।

नीति-शिक्षा

सत्यं वद धर्मं चर
सच बोलो धर्म करो
पीडित - जन - दुःखं हर
दुखियों का दुःख हरो
क्षुधितानामुदरं भर
भूखों का पेट भरो।

❀ ❀ ❀

धीरो भव वीरो भव
धीर बनो वीर बनो
शिष्टो भव सभ्यो भव
शिष्ट बनो सभ्य बनो
हृष्टो भव पुष्टो भव
हृष्ट बनो पुष्ट बनो।

❀ ❀ ❀

शुद्धं पठ शुद्ध पढ़ो
स्वच्छं लिख साफ लिखो
सभ्यो भव सभ्य बनो
शान्तो भव शान्त रहो।

सावधान

कुसुमानां कलिका मा त्रोटय
फूलों की कलियाँ मत तोड़ो।
पुस्तकस्य पत्रं मा मोटय
पुस्तक का पन्ना मत मोड़ो।
वातायन - शीशं मा स्फोटय
जँगले का शीशा मत फोड़ो।

गच्छति शकटे मा आरोहेः
चलती गाड़ी में मत चढ़ना।
गच्छति शकटे मा अवरोहेः
चलती गाड़ी में न उतरना।
दुष्टैः पुरुषैः सह मा गच्छेः
दुष्ट जनों के साथ न जाना।
कृत्वा कर्म झटिति आगच्छेः
करके काम तुरत आ जाना।

असंभव को संभव बनाओ

ऊषर - भुवि शस्यम् उत्पादय
ऊषर में खेती उपजाओ।

गिरि-शिखरे कुसुमानि विकाशय
गिरि के ऊपर फूल खिलाओ ।

पाषाणे कोमलताम् आनय
पत्थर में कोमलता लाओ ।

आपत्तौ आनन्दं मानय
आफत में आनन्द मनाओ ।

विना घनं पानीयं वर्षय
बिना मेघ पानी बरसाओ ।

शत्रुं मित्रं सर्वं हर्षय
शत्रु मित्र सबको हरसाओ ।

भूमितलं स्वर्गं सम्पादय
भूतल को वैकुण्ठ बनाओ ।

कोशिश करो, कोशिश करो

यत्नं कुरु कोशिश कर
यत्नं कुरु कोशिश कर ।
अध्ययने पढ़ने में
संग्रामे लडने में

पर्वतस्य शिखरेषु   पर्वत के शिखरों पर
सागरस्य लहरीषु   सागर की लहरों पर
आरोहणे   चढ़ने में
अग्रगतौ   बढ़ने में
यत्नं कुरु   कोशिश कर
यत्नं कुरु   कोशिश कर।

धूमशकटी (रेलगाडी)

गन्त्री गच्छति   गाडी जाती
गन्त्री गच्छति   गाडी जाती

अग्रे गच्छति   आगे जाती
पृष्ठे गच्छति   पीछे जाती
उच्चैः गच्छति   ऊँचे जाती
नीचैः गच्छति   नीचे जाती

गन्त्री   गच्छति
गाडी   जाती।

मन्दं गच्छति   धीरे जाती
शीघ्रं गच्छति   जल्दी जाती
वक्रं गच्छति   टेढ़ी जाती
सरलं गच्छति   सीधी जाती

गन्त्री गच्छति
गाडी जाती ।

झक झक झक झक
गानं गायति गाना गाती
धक धक धक धक
नादं कुरुते शोर मचाती
गन्त्री गच्छति
गाडी जाती ।

अंगारं खादन्ती कोयला खाती
जलं पिवन्ती पानी पीती
धूमं ददती धूआँ देती
रजः किरन्ती धूल उडाती
गन्त्री गच्छति
गाडी जाती ।

मध्ये मध्ये तिष्ठति बीच बीच में रुकती
यदा कदाचित् युध्यति कभी कभी लड़ जाती
यदा कदाचित् निपतति कभी कभी गिर जाती
पुनः उपरि उत्तिष्ठति फिर ऊपर उठ जाती

गन्त्री गच्छति
गाडी जाती।

शीते वा उष्णे वा — सर्दी या गर्मी में
सदा सेवते — हरदम सेवा करती
दिवसं वा रजनी वा — दिन हो या रजनी हो
अवकाशं नो लभते — छुट्टी कभी न पाती

गन्त्री गच्छति
गाडी जाती।

वर्षा

मेघः गर्जति गड़ गड़
बादल गरजे गड़ गड़
करका निपतति पड़ पड़
ओला गिरता पड़ पड़।

वर्षा वर्षति रिम झिम
वर्षा वरसे रिम झिम
विद्युत् विलसति चम चम
बिजली चमके चम चम।

सदा दुर्दिनं घोरम्
सदा भयंकर दुर्दिन
सदा तामसं दिवसे
सदा अन्धेरा दिन भर
गमनाऽगमने कठिने
जाना-आना मुश्किल
सदा प्रस्खलन - भीतिः
सदा फिसलने का डर ॥

सर्वत्र घटा अतिघोराः
सब ओर घटायें भीषण
सर्वत्र भयङ्कर—वर्षा
सब ओर भयंकर वर्षा
रुद्धः सकलो व्यापारः
सब का सब काम रुका है
भवने भवने जल-चर्चा
घर घर में जल की चर्चा ।

बहवः पन्थानो भग्ना
बहुतेरे पथ टूटे
बहवोऽपि सेतवो मग्ना
कितने ही पुल भी डूबे

निर्गृहा मानवा जाताः
सब हुए आदमी बे-घर
दुर्लभं भोजनं पानं
खाना-पीना भी दूभर ।

भुवि पानीयं पानीयम्
भू पर पानी हो पानी
सर्वत्र कर्दमः पङ्कः
सब ओर पाँक ओ कीचड़

सर्वत्र पिच्छिला भूमिः
सब ओर धरातल पिच्छिल
निपतन्ति अनेके धड़ धड़
कितने ही गिरते धड़ धड़ ।

प्रतिज्ञा

एष मदीयः प्रियतम-देशः भारतदेशः
यह है मेरा प्यारा देश भारत देश
एष मदीयः प्रियतम-वेषः सरलो वेषः
यह है मेरा प्यारा वेष सादा वेष ।

इयं मदीया दिव्या भाषा संस्कृतभाषा
यह है मेरी अनुपम भाषा संस्कृत भाषा
देशधर्मयोः महती आशा महती आशा
देश-धर्म की महती आशा महती आशा।
एतत्सेवां सदा करिष्ये सदा करिष्ये
इनकी सेवा सदा करूँगा सदा करूँगा
एतत्कष्टं सदा हरिष्ये सदा हरिष्ये।
इनका हरदम कष्ट हरूँगा कष्ट हरूँगा।

चटका (फरगुद्दी)

कियती चपला	कितनी चंचल
एषा चटका	यह फरगुद्दी
चूँ चूँ कुरुते	चूँ चूँ करती
चीं चीं कुरुते	चीं चीं करती
फुर उड्डयते	फुर उड़ जाती
पुनरागच्छति	फिर आ जाती
किञ्चिद् विरमति	छन भर रुकती
जातु कूर्दते	कभी कूदती
परितः पश्यति	चारो ओर निरखती
सदा शङ्किता	हरदम शंकित रहती

सततं भीता	हरदम डरती
इतस्ततः उड्डयते	इधर उधर उड़ जाती
तृणं मुखे आनयते	तिनका मुँह में लाती
सुन्दरनीडं रचयति	सुन्दर नीड़ बनाती
सुखिता समयं गमयति	सुख से समय बिताती ।

सूर्योदय

सूर्यः	उद्यति
सूरज	उगता
तिमिरं	नश्यति
तिमिर	भागता ।

मनुजे मनुजे	मनुज मनुज में
हृदये हृदये	हृदय हृदय में
जीवे जीवे	जीव जीव में
कुसुमे कुसुमे	फूल फूल में
नवं यौवनं	नई जवानी
नवा चेतना	नई चेतना
नवः प्रसादः	नव प्रसन्नता
नव-पराक्रमः	नया पराक्रम

परितो विलसति
सबमें जगता
सूर्यः उदयति
सूरज उगता।

गोमाता

एषा मम गोमाता
यह मेरी गोमाता

कीदृक् अस्या रूपम् — कैसी इसकी सूरत
कीदृक् सरल-स्वभावः — कैसा सरल स्वभाव
मधुरे अस्या नयने — मीठी इसकी आँखें
करुणाभरितो रावः — दर्दभरी आवाज

अस्या आदरभावः
इसका आदर करना
सर्व - सुमङ्गल - दाता
सबका मङ्गल दाता, एषा······

नित्यं प्रातः गच्छति — रोज सबेरे जाती
सायं पुनरागच्छति — संझा को फिर आती

दुग्धं सदा प्रयच्छति दूध हमेशा देती
मनो मदीयं हरते मेरा मन हर लेती

अस्याः सुन्दर-वत्सः
इसका सुन्दर बछड़ा
सर्वजनानां त्राता
सब लोगों का त्राता, एषा······

वर्षा का अन्त

वर्षा गता
वर्षा गई।

जलदा गता बादल गये
भेका गता मेढक गये
वात्या गता आँधी गई
विद्युद् गता बिजली गई

वर्षा गता
वर्षा गई।

गड़ गड़ गतम् गड़ गड़ गया
तड़ तड़ गतम् तड़ तड़ गया

टर टर गतम्	टर टर गया
सुषमा नवा	सुषमा नई

वर्षा गता
वर्षा गई ।

सलिलं गतम्	पानी गया
पङ्को गतः	कीचड़ गया
परितोऽधुना	सब ओर अब
विमला मही	निर्मल मही

वर्षा गता
वर्षा गई ।

रंग-बिरंगी दुनिया

कश्चित् जीवति	कोई जीता
कश्चित् म्रियते	कोई मरता
कश्चित् रोदिति	कोई रोता
कश्चिद् विहसति	कोई हँसता ।
कश्चिद् योगी	कोई योगी
कश्चिद् भोगी	कोई भोगी

कश्चित् पुष्टः	कोई तगड़ा
कश्चिद् रोगी	कोई रोगी ।
कश्चित् भूषित-देहः	कोई देह सजाये
कश्चित् नग्न-विनग्नः	कोई देह उघारे
कश्चित् मुंडित-मुडः	कोई मूँड मुडाए
कश्चित् सज्जित-केशः	कोई केश सजाए ।
एकः सौधे निवसति	एक महल में रहता
एकः मार्गे शेते	एक सड़क पर सोता
एकः सेवां कुरुते	एक गुलामी करता
एको भवति विजेता	एक विजेता होता ।

पिपीलिका (चींटी)

कियती तन्वी	कितनी पतली
कियती सरला	कितनी सीधी
कियती लध्वी	कितनी हलकी
कियद्-दुर्बला	कितनी दुबली
कियती ह्रस्वा	कितनी छोटी

सा पिपीलिका
वह चींटी है ?

किन्तु सर्वदा	लेकिन हरदम
श्रमं विधत्ते	मिहनत करती
दूरं दूरं गच्छति	दूर दूर तक जाती
चलति सर्वदा	हरदम चलती
सततं धावति	सदा दौड़ती
देश-देशतः	जगह जगह से
खाद्यवस्तु आनयते	खाने का सामान ले आती
बिले निधत्ते	बिल में रखती
समये समये खादति	समय समय पर खाती
सुखिता जीवति	सुख से जीती ।
कियत् उत्तमम्	कितना उत्तम
कियत् निर्मलम्	कितना निर्मल
कियत् सुन्दरम्	कितना सुन्दर
कियत् निर्भरम्	कितना निर्भर
इदं जीवनम्	यह जीवन है !
अस्मिन् क्षुद्रशरीरे	इस छोटे से तन में
कियत् साहसम्	कितना साहस
कियत् पौरुषम्	कितना पौरुष
कियती शक्तिः	कितनी ताकत

कियान् आत्मविश्वासः	कितना निजी भरोसा
आश्चर्यं, आश्चर्यम्	अचरज है अचरज है !

हे पिपीलिके	हे पिपीलिका
धन्यतमा असि	धन्य धन्य हो
चिरंजीविनी	बहुत दिनों तक जीओ,
नीति-धर्मयोः	नीति-धर्म का
विश्वं पाठं शिक्षय	जग को पाठ पढ़ाओ
श्रम-पौरुषयोः	श्रम-पौरुष का
सर्वं मार्गं दर्शय	सबको राह दिखाओ
नमो नमस्ते	नमस्कार है, नमस्कार है ।

देहात का एक चित्र

भारत-ग्राम-वासिनो लोकाः
भारत के देहाती लोग

अशनं स्वल्पम्	खाना थोड़ा
मलिनं वसनम्	गन्दा कपड़ा
शुष्कं वदनम्	सूखा मुखड़ा
कथयति दुःखम्	कहता दुखड़ा

हस्व - कुटीरम् छोटी कुटिया
भग्ना खट्वा टूटी खटिया
वक्र - पट्टिका टेढी पटिया
रोदिति कन्या रोती बिटिया ।

करे तमालम् सुर्ती कर में
कलहो गेहे झगड़ा घर में
चिन्ता हृदये चिन्ता मन में
कृशता देहे कृशता तन में ।

भ्रष्टा नाली गन्दी नाली
वदने गालिः मुँह में गाली
महा - दुर्मतिः भारी दुर्मति
घोर - दुर्गतिः भारी दुर्गति ।

सततं चिन्ता सततं रोगः
हरदम चिन्ता हरदम रोग
भारत-ग्राम-वासिनो लोकाः
भारत के देहाती लोग ।

शिक्षा—

कुरु परिश्रमम्	करो परिश्रम
कुरु परिश्रमम्	करो परिश्रम
इतस्ततो मा	इधर उधर मत
ग्रामे ग्रामे	गाँव गाँव में
भ्रामं भ्रामं	घूम घूम कर
स्थायं स्थायं	बैठे बैठे
जल्पं जल्पं	बक बक करते
स्वापं स्वापं	सोते सोते
कदापि समयं	कभी समय को
व्यर्थं यापय	व्यर्थ गँवाओ
निजं जीवनं	निज जीवन को
साफल्यं नय ·	सफल बनाओ
नैव कदाचित्	नहीं कभी भी
भव निरुद्यमः	रहो निरुद्यम
कुरु परिश्रमम्	करो परिश्रम
कुरु परिश्रमम्	करो परिश्रम ॥